ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

# कबीर की विलक्षणता
# Singularity of Kabir

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

**शशि बाला रावत**
प्रवक्ता,
हिंदी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, अगस्त्य मुनि,
रूद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड, भारत

**सारांश**

हिन्दी साहित्योतिहास का भक्ति काल अपनी कई विशिष्टताओ के कारण साहित्योतिहासकारों दारा 'स्वर्णकाल' के अभिमान से मंडित किया। इस अभिधान के मूल में जिन भक्तों–संतों का योगदान है उनमें कबीर का व्यक्तित्व अनूठा है। कबीर कवि ही नही, समाज–सुधारक भी हैं। उन्होंने साहित्यिक एवं सामाजिक दोनों भावनाओ का निर्वाह किया हैं। कबीर की चेतना विद्रोही है, वे जाति–पॉति, छूत–अछूत, हिन्दी–तुर्क, वर्ण–'अवर्ण, राजा–रंक, के भेदभाव को समाप्त कर मानवता के पुजारी थे। कबीर का व्यक्तित्व सर्वजयी थी। ऐस गुरु से कबीर ने सहजता की प्राप्ति की। कबीर पीड़ा संत्रास में जिए। कबीर वाणी के शहंशाह थे। वीर साधक की अखंड वीरता आत्मविश्वास की कालजयी गोद में ही पल्लवित होती है। कबीर 'कुसुमादपि कोमल वज्रादपि कठोर' की उक्ति को चरितार्थ करते हैं। कबीर का व्यक्तित्त्व समन्वयकारी है। उनकी भाषा व्यंग्यात्मक है। वाह्मडंबर का खंडन एवं अहिंसा पर बल दिया।

The Bhakti period of Hindi literature has been celebrated by the historians with the pride of 'Swarna Kaal' due to its many specialties. Kabir's personality is unique among the devotees and saints who contribute to the cause of this designation. Kabir is not only a poet, he is also a social reformer. He has carried both literary and social sentiments. Kabir's consciousness is rebellious, he was the priest of humanity by ending the discrimination of caste-panties, untouchables, untouchables, Hindi-Turks, varna-'varnas, raja-ranks. Kabir's personality was omnipotent. Kabir attained ease from this guru. Kabir lived in pain. Kabir was the emperor of Vani. The unbroken valor of the heroic seeker flourishes in the classic lap of self-confidence. Kabir refers to the phrase 'Kusumadapi Komal Vajradapi Karda'. Kabir's personality is coordinating. His language is sarcastic. The emphasis was on denunciation and non-violence of Wahmadambara.

**मुख्य शब्द :** कबीर की विलक्षणता, भेदभाव, साहित्यिक, आत्मविश्वास।
Kabir's Prodigy, Discrimination, Literary, Confidence

**प्रस्तावना**

कार्य अद्भुत एवं अमर है। भक्ति साधना इनकी प्रेम साधना है। लोक जागरण एवं समाज बोध कबीर का कथ्य है। उनकी प्रासंगिकता आधुनिक भैतिकवादी वर्तमान परिवेश के लिए भी बनी हुई है। कबीर ने हिन्दू–मुस्लिम के द्वन्द्व को समाप्त कर सच्ची मानवता का प्रतिपादन किया है। यह मानवता विश्वव्यापी है। कबीर किसी जाति, संप्रदाय का विरोध ने करके बुराईयों के निराकरण हेतु बाजार के चौराहे पर लुकाठा हाथ में लेकर खड़े हैं। उनका साथी वही हो सकता है, जो अपने सांसारिकता रूपी घर को फूंक कर आये। भक्ति हेतु माया, मोह, एष्णा का त्याग कर समर्पण की पूर्ण अपेक्षा होती है।

भक्तिकालीन संत कवियों की वाणी आज जहाँ हमें दिशा बोध और युगबोध कराने में पूर्ण सक्षम हैं। वहाँ भौतिकवाद और आतंकवाद की समस्याओं से ग्रस्त विश्व बन्धुत्व, अहिंसा और शांति का संदेश दे सकती है। इसमें संदेह नहीं है। प्रतिभा–प्रखर कबीर की साखी–सबद–रमैनी के स्वरूप में वाणी युग–युग से गुंजायमान है। उसकी गहनता और उपदेयता आज भी समझी और महसूस की जा रही है। 'गुजरात के कबीर' कहे जाने वाले सत अखा की वाणी भी सार्वकालिक और मनुष्य मात्र के लिए बोध प्रदायिनी है। दोनों ही संतों की वाणी में जीवन के ऐसे सूत्र हैं जिन्हें आज हम विश्व के सामने रखकर भारतीय संस्कृति के 'वसुधैवकुटुंबकम्' के संदेश को प्रसारितत कर सकते हैं।

**कबीर ने भूत**

भविष्य, जाति–धर्म बन्धन की सीमाओं के परे सहजता और सरलता के वर्तमान को देखा, भोगा और कहा। हर युग की गम्भीर–गम्भीर समस्याओं के समाधान के लिए यदि भक्ति काव्य राम बाण औषधि है, तो उनमें से एक स्त्रोत कबीर का काव्य है। कबीर जनता के बीच में रहे, जनता की भाषा में उनकी बात कहते रहे, युग की समस्याओं से जूझते रहे। धार्मिक एकता धार्मिक शुचिता, धार्मिक व्यापकता की बात कहते–कहते लोगों के दिलों में प्रेम की मोहिनी गंध भरते रहे। वे परम सत्य के अन्वेषी थे। सामाजिक परिष्कार के नित नए प्रयोग करते थे। उनका पूरा जीवन एक वृहद् पर खुली किताब की तरह था।

अपने युग के भारत में सामाजिक जागरण के अग्रणी महापुरूष होने के साथ–साथ उन्होंने धार्मिक क्रांति का भी नेतृत्व किया। वे सभी से पवित्र, पाक–साफ जीवन बिताने का आग्रह करते हैं और सभी प्रचलित बाह्मडंबरों का विरोध करते हैं। ताकि सामाजिक एकता बनी रहे। तभी तो वे कहते हैं कि प्रभु घट–घट में विराजमान है, वह किसी बाहरी निर्दिष्ट मन्दिर– मस्जिद में थोड़े ही मिलता है–

सुमिरन सुरत लगाइ के, मुखते कछु न बोल।
बाहर के पट देयकर, अन्तर के पट खोल।।

कबीर की दृष्टि मानवतावादी थी। वे संकीर्ण धार्मिक मान्यताओं के विरोधी थे सामाजिक परिवर्तन के हामी थे। रूढ़ियों के खिलाफ थे। धार्मिक अंधविश्वासों को उन्होंने कभी प्रश्रय नहीं दिया। इसीलिए काशी और मगहर में कोई अंतर नही किया। इसी मान्यता को सत्यता में बदलने के लिए वे काशी से मगहर आए जहॉ वे अपनी अंतिम सांस तक रहे। आत्मा–परमात्मा को एक मानने वाली कबीर प्राणीमात्र को एक प्रभु, एक अनंत, अपार ज्योति से उत्पन्न हुआ मानते हैं। जिनका शरीर एक–सा है, एक–सा मांस है, एक–सा रक्त है। कबीर ने शोषित–सर्वहारा के लिए परमात्मा का वो द्वार खोल दिया जो सदियों से शोषक सवर्णों ने बंद कर रखा था।

वे निर्भीक और निरंतर संघर्षशील रहने वाले, जुझारू संत–भक्त कवि व जनवादी गायक थे। धर्म–कर्म नाम पर लोगों को ठगने वाले धार्मिक गुरूडम के सख्त विरोधी थे। उनका गृहस्थ जीवन एक निर्मल दर्पण की तरह था। वे श्रम साधना के परिपोषक थे और प्रारंम्भ में हाथ करघे पर खादी बुनकर जीविका चलाते थे। उनके पास मानव प्रेम की अपरा संपत्ति थी ,जो कभी घटती नहीं, लुटाने पर सदैव बढ़ती है। कबीर ने भारत की आत्मा रवींन्द्रनाथ ठाकुर को संपदित कर दिया था। कबीर ने महात्मा गाँधी को जगा दिया था। डॉ अम्बेडकर को वशीभूत कर लिया था। पवित्र गुरू ग्रंथ साहिब के जरिए विश्व में कबीर की वाणी गूँज रही है।

परमेश्वर–परब्रह्म–आत्मानुभुति से ही पहचाना जा सकता है। जो निराकार है। अनिर्वचीय है, अनित्य है, निर्गुण है, ऐसी मर्मस्पर्शी सीख संत कवि कबीर ने दी । कबीर का उदात्त, लोक मंगलकारी, क्रांतिदर्शी व्यक्तित्त्व और कृतित्व, जीवन और दर्शन भारतीय लोक मानस का अक्षय प्रोरण स्त्रोत रहा है। उनका विशाल साहित्य शोषित–आहतत मानवता की विरासत है। कबीर को लेशमात्र भी कपड़ा बुनने का कार्यहीन नहीं लगता था। यह उनकी दार्शनिकता, उनकी भक्ति में सहायक होता था। उनका ज्ञान बर्द्धन करता था।

जाति जुलाहा मतित का धरि ।
सहजि सहज गुन रमैं कबीर।

ईश्वर में ध्यान रत, सहज ज्ञानाधीन, बुद्धि प्रखर में कबीर कपड़ा बुनने के अपने व्यवसाय से ही शब्दावली के अपनी भावनाओं को प्रकट करते हैं। वे एक जगह कहते हैं –

झीनी झीनी बीनी चदरिया, झीनी झीनी बीनी।
सो चादर सुर, नरमुनि ओढ़ी, ओढ़ी के मैली कीनी।

कबीर इस प्रकार के संत–भक्त थे। जीव रूपी आत्मा को जिस ईश्वर रूपी जुलाहे ने मृदुल–सूक्ष्म चादर ओढने को प्रदान की थी । सद्चित संतों ने वह मैली नहीं की। जबकि देवों, मनुष्यों और मुनियों ने उसे विकारों से मैला कर दिया था। कबीर ने उसें बड़े यत्न से ओढ़ा और उस पर सांसारिक माया का मैल नहीं चढनें दिया। कबीर ने सतगुरु की जो महिमा गायी हैं और कहा है कि मैं अपने गुरू के लिए प्रतिदिन अनेक बार बलिहारी जाता हूँ, जिसने मुझे एक क्षण में ही मनुष्य से देवतुल्य बना दिया, उस सतगुरू की महिमा अनन्त है। कबीर मानव धर्म के परिपोशक थे । वे परम भक्त, शुद्ध वैश्णव थे। वे न हिन्दू थे, न मुसलमान ,यह उन्होंने स्पष्ट कहा है–

कबीर हिन्दी मूये राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, दुह मै। कदे न जाइ।

वे हिन्दू रीति–रिवाजों में व्याप्त रूढ़िवादिता के विरूद्ध थे। लेकिन ब्रह्म, निगुर्ण–निराकार, सतत् स्वरूप सत्ता के पुजारी थे। मानवतावाद ही उनका धर्म था। वे किसी धर्म–मत विशेष को नहीं मानते थे। वे तो तत्कालीन प्रचलित सभी मतों के बाह्मडंबरों का विरोध करते हुए सात्त्विक भाव से मानवीय संवेदना को स्पर्श करते हुए अध्यात्म–चिंतन करने के पक्षपाती थे।

कबीर ने हिन्दू धर्म की उदारवादी परंपरा और बौद्ध धर्म से प्रभावित नाथ संप्रदाय के सार को अपनी चिंतनधारा में समेटा। हिन्दू धर्म के कर्मकांड और आंडबरो का यद्यपि कबीर ने विरोध किया, लेकिन सच्चे मन से परमात्मा की भक्ति का संदेश जनमानस को दिया। कबीर ने हिन्दू और तुर्क दोनों धर्मो में घुसे धार्मिक कट्टरता के संवाहक पुरोहित और मुल्लाओं को खुलेआम फटकारा। जिसके फलस्वरूप धर्म निरपेक्षता, सामाजिक ,सामंजस्य, देश की एकता, अखंता और सामाजिक नव–जागरण का समन्वित आंदोलन आगे बढ़ा।

कबीर ने निराशा के गहन सागर में डबी हुई भारत की कोटि–कोटि जनता को अपने भक्ति मार्ग द्वारा सचेत किया। उसमें प्राण फूकें। कबीर ने सदाशयता से तमाम पाखंडों का विरोध किया। वे ब्रह्मणवाद से लड़े, मुस्लिम कट्टरता से लडे। वे सांप्रदायिकता से लड़े । वे विद्रोही थे, प्रगतिशील थे। ऐसी निर्भीकता, निडरता किसी भी जन कवि में दुर्लभ है। लोक और वेद, किताब और काबा, सुन्नता और जीवहत्या सभी के विरूद्ध उन्होंने जनता को संगठित किया। कबीर ने एक क्रांति दृष्टा के रूप में अपने पूर्व समकालीन चिंतनधारा में से भक्ति,

मानवतावाद और सामाजिक सौहार्द जैसे भावों को ग्रहण करके निराशा के गहन अंधकार में डूबी जनता के लिए एक नया पथ प्रशस्त किया। एक नई ज्योतित बिखेरी।

**अध्ययन का उददेश्य**

हिंदी में संत – कवि जिस विचारधारा को लेकर अपनी वाणियों की रचना में प्रवृत्त हुए। उसका मूल उद्देश्य चौरासी सिद्धों एवं नाथों की रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है। कबीर की विलक्षणता का मूल आधार परमात्मा की एकता है। कबीर में मुसलमानों के एकेश्वरवाद तथा हिंदुओं के बहुदेववाद के विरुद्ध एक ईश्वर का प्रचार किया, जो घट – घट वासी हैं, सर्वत्र रमा हुआ है और निर्गुण एवं निराकार है।

**निष्कर्ष**

कबीर हिन्दी की निगुर्ण भक्तिधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के सन्त कवि थे। कबीर पढ़े– लिखे नहीं थे। 'मसि कागद छूयौं नहीं,कलम गहि न हाथ' कहते हुए भी इनकी अद्भुत काव्य प्रतिभा थी। इनकी वाणी का संग्रह इनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक ' नाम से किया था। भक्ति के क्षेत्र में कबीर का अद्वितीय स्थान है। उनकी साधना भक्ति का साधना है। भक्ति के द्वारा ही उन्होंने भक्ति के क्षेत्र में एक नवीन अलौकिक आदर्श की सृश्टि की । कबीर की रचनाओं में प्रेम और विश्वास ,ज्ञान और भक्ति ,प्रेम ,चिन्तन और ज्ञान सभी का सारतत्व था। वे निगुर्ण ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार किया और मोह, तृश्णा एवं स्वार्थ आदि मन के कल्मश को दूर करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता पर अधिक बल दिए क्योकि ज्ञान –सूर्य के अलौकिक प्रकाश में ही मन –सरोज प्रफुल्लित होता है–

संतों भाई, आई ज्ञान की आँधी रे
भ्रम की टाटी सबैं उडाँणी, माया रहै न बाँधी रे।

यहाँ ज्ञान की आँधी, भक्ति रूपी जल की वर्शा के पूर्व की भूमिका है। जिस प्रकार आँधी के पश्चात् जल बरसता है। उसी प्रकार ज्ञानोदय के पश्चात् ही ईश्वर के प्रति सच्चे, अहेतुक प्रेम का प्रादुर्भाव होता है। ज्ञान की सहायता से मन को निर्मल कर भगवत् प्रेम की प्राप्ति ही कबीर का परमोद्देश्य था। कबीरदास कवि ही नहीं थे, वे एक दार्शनिक सन्त भी थे। वे उस परमतत्व को अन्यत्र, अलख, निरंजन, निरभै, शून्य या स्थूल से भिन्न या दृश्य और अदृश्य विलक्षण मानते थे। उनका 'राम' 'निर्गुण ब्रह्म' है। जो विश्वातीत और विश्वमय है उनका निर्गुण ब्रह्म दशरथ नन्दन 'राम' नहीं है। वे ससीम नहीं असीम है। सन्त कबीर एक सच्चे रहस्यवादी थे। वे 'राम' से विभिन्न सम्बन्ध स्थापित करके उनसे कौतुक किया करते थे। वे जीवन रूप में स्वयं को पत्नी मान कर पति–रूप भगवान के प्रति अपने प्रेम की व्यंजना करते थे। उनका व्यक्तित्त्व एक ऐसा अनूठा व्यक्तित्त्व था जिसे आज भी प्रांसगिक मानते हुए उसके रहस्य को खोजने का प्रयास प्रायः सभी संत काव्य मनीशी करते हैं। उनके भावों में भारतीय अद्वैतवाद तथा इस्लामी सूफीवाद का एक अद्भुत विलक्षण समन्वय दिखाई देता हैं इसी समन्वय में उनका रहस्यवाद छिपा हुआ है जिसमें उन्होंने कर्मकाण्डों का, अडम्बरों का विरोध करते हुए सहज की स्थापना कर जिस भाव को है। ऐसी विलक्षण प्रतिभा को उन्हीं की वाणी में कहा जा सकता है–

का लै गुरू संतोखिए हौंस रहि मन माहि।।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *कबीर, व्यक्तित्व और कृतित्व, श्री शरण , पृ 15*
2. *वही, पृ 15*
3. *कबीर साहित्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन, पुलकोरिया होरो*
4. *वही, पृ 24*
5. *वही, पृ 32*
6. *वही, पृ 35*